jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:08 PM Page 22

मुद्रा में आदमकद तैलचित्र इतना जीवंत है कि वह अनूठा चित्र घर-घर में पहुंच गया। संस्थान के उद्घाटन के अवसर पर नानाजी ने दीनदयाल जी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालने वाला एक ग्रंथ अंग्रेजी और हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया। इस शोध संस्थान को बौद्धिक गतिविधियों का केन्द्र बनाने के लिए नानाजी ने श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी, डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी जैसे बौद्धिक व्यक्तित्वों को संस्थान से जोड़ा। 1977 में आपातकाल के बाद वे केरल के श्री पी. परमेश्वरन को निदेशक पद पर लाए। अंग्रेजी और हिन्दी में 'मंथन' नाम से त्रैमासिक शोध पत्रिकाएं आंरभ की। विचार-गोष्ठियों, निबंध प्रतियोगिताओं एवं प्रकाशनों का तांता लगा दिया।

1971 के मध्यावधि चुनाव के बाद से भारतीय राजनीति में एक ओर इंदिरा गांधी के निरंकुशवाद, दूसरी ओर विपक्षी दलों में व्याप्त व्यक्तिवाद, अवसरवाद और भ्रष्टाचार को देखकर नानाजी मन ही मन बहुत उद्विग्न रहने लगे। सच कहा जाए तो उस समय नानाजी विभाजित मनःस्थिति में जी रहे थे। एक ओर तो वे जनसंघ के महामंत्री के नाते राजनीति में सक्रिय दिख रहे थे, दूसरी ओर वे मन ही मन वोट और दल की राजनीति के चरित्र परिवर्तन का उपाय खोजने में लगे थे।

उन दिनों उनका इंडियन एक्सप्रेस के स्वामी रामनाथ गोयनका से बहुत घनिष्ठ संबंध था। गोयनका जी के माध्यम से सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण जी से निकटता बनी। जयप्रकाश जी स्वयं भी भारतीय राजनीति के चरित्र की गिरावट से बहुत दुःखी एवं चिन्तित रहते थे। कभी-कभी वे व्यवस्था-परिवर्तन की बात भी करते थे। किन्तु उनका अपना व उनकी पत्नी प्रभावती जी का स्वास्थ्य गिर रहा था। प्रभावती जी के कैंसर का रोग घातक स्थिति में पहुंच रहा था। उन्हें मुंबई के टाटा कैंसर अस्पताल में कमरा नहीं मिल रहा था। नानाजी और गोयनका जी ने टाटा के लिए आरक्षित दो कमरों में से एक कमरा प्रभावती जी को दिलवाया। नवंबर 1972 में नानाजी स्वयं जयप्रकाश जी के साथ मुंबई जाकर उनके साथ ही रहे। तब नानाजी ने जयप्रकाश जी को निकट से देखा। उनकी सरलता, निःस्वार्थता और लोकमंगल की भावना से वे बहुत अधिक प्रभावित हुए। प्रथम पंक्ति के स्वतंत्रता सेनानी होते हुए भी जयप्रकाश जी ने अपने लिए सत्ता कभी नहीं चाही। पं. नेहरू के कहने पर भी वे मंत्री नहीं बने। 1957 के बाद दल और वोट की राजनीति से उन्होंने अपने को अलग कर लिया। इसलिए नानाजी और गोयनका

दिल्ली में दीनदयाल शोध संस्थान के भवन के उद्घाटन के अवसर पर हवन करते श्री गुरुजी के साथ नानाजी

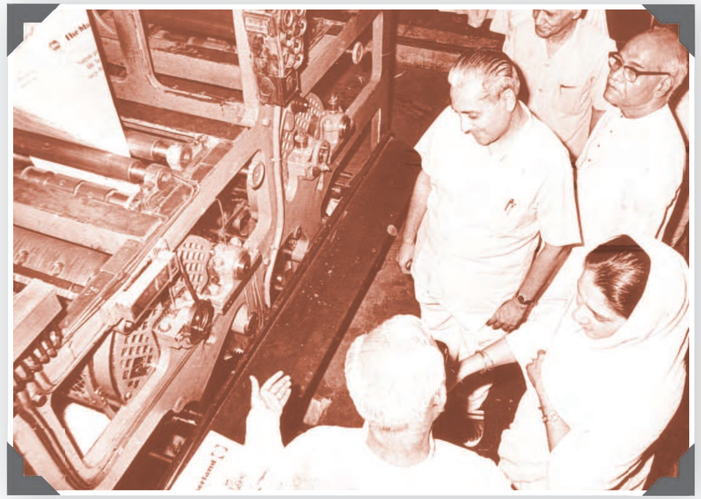

मदरलैंड प्रेस में रामनाथ गोयंका, राजमाता सिंधिया व विष्णुहरि डालमिया के साथ

जी दोनों को लगा कि जयप्रकाशजी ही इस राजनीति का विकल्प प्रदान कर सकते हैं। 15 अप्रैल 1973 को पटना में प्रभावती जी के निधन के बाद जयप्रकाश जी अंदर से टूट गए थे। उनका स्वयं का स्वास्थ्य भी जर्जर था। इस मनःस्थिति में उन्होंने दिल्ली में इंडियन एक्सप्रेस के गेस्ट हाऊस में गोयनका जी का आतिथ्य स्वीकार कर लिया। वहां गोयनका जी, रामधारी सिंह दिनकर एवं गंगाशरण सिंह आदि मित्र जे.पी. को दिलासा देते और उनके संकल्प बल को दृढ़ करने का प्रयास करते। नानाजी के अतिरिक्त बीच-बीच में चन्द्रशेखर भी आते रहते थे और देश की परिस्थिति पर विचार-मंथन करते थे।।

राजनीति के चारित्रिक पतन और इंदिरा गांधी की अधिनायकवादी प्रवृत्तियों से जे.पी. बहुत अधिक उद्वेलित थे। जुलाई और सितंबर 1973 के बीच उन्होंने अंग्रेजी साप्ताहिक 'एवरीमेन्स' में तीन लेखों की माला में अपनी चिंता उड़ेली। कुछ राज्यों में विधानसभाओं के चुनाव के पूर्व दिसंबर 1973 में जे.पी. ने 'लोकतंत्र के लिए युवा' शीर्षक से युवाओं के नाम एक अपील भी जारी की। लगभग उसी समय गुजरात के कांग्रेसी मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल के विरुद्ध नवनिर्माण समिति के तत्वावधान में छात्र आंदोलन प्रारंभ हो गया।

नानाजी, गोयनका जी एवं पूरी मित्रमंडली को लगा कि यदि इस समय जे.पी. गुजरात जाकर उस आंदोलन का विराट रूप देखें तो शायद उनमें नेतृत्व करने का उत्साह जग सकेगा। सबने मिलकर जे.पी. को 14-15 फरवरी 1974 को अहमदाबाद यात्रा के लिए तैयार कर लिया। नानाजी जे.पी. के स्वागत एवं कार्यक्रमों की तैयारी के लिए सात दिन पहले अहमदाबाद पहुंच गए। गुजरात आंदोलन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की प्रमुख भूमिका थी। अतः नानाजी की प्रेरणा और योजना से जे.पी. का अहमदाबाद एयरपोर्ट पर इतना विशाल और भव्य स्वागत हुआ कि वहां उमड़े जन-ज्वार को देखकर जे.पी. भावविभोर हो गए। वे बार-बार कहते थे कि "इस दृश्य को देखकर 1942 की याद आती है।" जे.पी. का नैराश्यभाव छंट गया और युवा-शक्ति के बल पर व्यवस्था परिवर्तन का उन्हें विश्वास होने लगा। 13 फरवरी 1974 को सावरमती आश्रम में रचनात्मक कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए जे.पी. ने कहा, "यह क्रांतिकारी परिस्थिति है। उसकी मांग है परिवर्तन। मैं स्वास्थ्य के कारण लाचार हूँ। दिल में हिम्मत है, लेकिन नाजुक स्वास्थ्य के कारण हिचकता हूँ।" किन्तु साथ ही जे.पी. ने माना